प्रथम अध्याय

जितेन्द्र श्रीवास्तव का व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रथम अध्याय

(१) व्यक्तित्व

१.१ जन्म-परिचय

१.२ शिक्षा

१.३ व्यवसाय

१.४ विवाह एवं परिवार

१.५ पुरस्कार एवं सम्मान

(२) कृतित्व

२.१ काव्य संग्रह

२.२ कहानियां

२.३ आलोचना

२.४ संपादित पुस्तकें

२.५ अन्य

(१) व्यक्तित्व

'व्यक्तित्व' शब्द को अंग्रेजी भाषा में पर्सनालिटी (Personality) कहा जाता है। यह पर्सनालिटी लैटिन भाषा के 'परसोना' शब्द से उत्पन्न है, जिसका अर्थ 'मुखौटा' या फिर 'चहेरा' होता है। मनोविज्ञान की परिभाषा में कहा जाए तो प्रत्येक व्यक्ति अपने ऊपर विशेष मुखौटा लगाए रखता है जिसे उसका व्यक्तित्व कहते हैं। वास्तव में व्यक्तित्व गुणों तथा विशेषताओं का ही मिश्रण होता है। व्यक्तित्व के अंतर्गत व्यक्ति की जैविक विन्यास, जन्मजात रुझान, मूल प्रवृत्तियां तथा अर्जित विन्यास एवं प्रवृत्तियों का समूह है। मनोविज्ञान का नियम है कि प्रत्येक मनुष्य अपने विशेष प्रकार के गुण और विशेषताओं के कारण ही अन्य व्यक्ति से अलग होते हैं। व्यक्तित्व के कारण ही किसी भी व्यक्ति की आंतरिक रूप से पहचान होती है।

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण एवं विकास में पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक इत्यादि वातावरण का प्रभाव पड़ता है। व्यक्तित्व निर्माण की क्रिया जन्म के साथ ही प्रारंभ हो जाती है। आरंभ में वह पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण से अभिन्न रूप से जुड़ा रहता है और इसका प्रभाव उस व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व पर पड़ना स्वाभाविक है। मनुष्य के जीवन में अधिक प्रभाव पाठशाला जीवन का पड़ता है। वहां उसे कई तरह के व्यक्तित्व का सामना करना पड़ता है अर्थात मनोवैज्ञानिक वास्तविकता है कि आनुवांशिकता (DNA) के बाद युग परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका व्यक्तित्व के निर्माण में रहती है। इन दोनों तत्व को कविता रचना प्रक्रिया से अलग नहीं किया जा सकता। युग का वातावरण और बोध सर्जक के चित्त में चेतन और अचेतन रूप से विद्‌यमान रहता है। इस संदर्भ में साहित्यकार बाबू गुलाब राय का कथन उचित है-"कवि के साथ सहानुभूति के लिए पाठक का उसके निजी जीवन तथा उसके समय के वातावरण से परिचित होना आवश्यक है। निजी जीवन के अध्ययन से हम उसकी मानसिक परिस्थितियों को जान सकेगे, जिसके कारण

वह काव्य रचना करने के लिए प्रेरित हुआ है।"[1] काव्य रचना की प्रेरणा किसी भी कवि के लिए उसके जीवन की विशेषताएं तथा व्यक्तिगत प्रेरणाएं होती हैं। इस दृष्टि से विचार किया जाए तो किसी कवि की रचना के अध्ययन से पूर्व उसके जीवन या व्यक्तित्व का अध्ययन करना उचित रहेगा।

१.१ जन्म परिचय:- समकालीन हिंदी कविता के प्रसिद्ध कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव का जन्म देश के एक बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के रुद्रपुर तहसील के एक छोटे से गांव सिलहटा के श्रीवास्तव परिवार में 8 अप्रैल, 1974 हुआ को हुआ था। उनका पूरा नाम जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव है। इनके पिताजी उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के निवासी थे। इनके पिता का नाम सोमनाथलाल श्रीवास्तव था तथा माता श्रीमती कलावती देवी है। इनके नाना का नाम हृदयनारायणलाल श्रीवास्तव और नानी का नाम फुल देवी था। इनकी माता एवं नानी घरेलू एवं धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। इनके पिता प्रगतिशील विचारधारा के व्यक्ति थे। वे एक चेतना संपन्न व्यक्ति थे। गरीबों लोगों की सहायता करना तथा वंचितों के पक्ष में निरंतर संघर्ष करते थे। इनके नाना भी समाज के शोषित वर्ग के लोगों की सहायता किया करते थे तथा उनके पक्ष में हमेशा खड़े रहते थे। बचपन से ही माता-पिता और नाना- नानी के साथ रहने के कारण उन सबका प्रभाव कवि पर पड़ा। माता-पिता को ही वे अपना प्रथम गुरु मानते हैं। वे स्वयं डॉ. चैनसिंह को दिए साक्षात्कार में कहते हैं,"इन सबका मेरी चेतना पर बहुत गहरा असर पड़ा और वह आज तक है। मेरी जीवन का जो आरंभिक हिस्सा है लगभग 14-15 वर्षों का, जब एक तरफ से चेतना का निर्माण होता है। वह समय मैंने ठेठ गांव में गुजारा है, लोगों के बीच गुजारा है, प्रकृति के बीच गुजारा है।"[2]

कवि की तीन बहनें हैं जिनके नाम श्रीमती ज्ञांति श्रीवास्तव, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव तथा श्रीमती उषा श्रीवास्तव है। बचपन में इन्हें अपनी बहनों से काफी प्रेम मिला, जिससे उनमें भावनात्मक एवं संवेदनात्मक शक्ति का विकास होता

रहा। एक मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में संवेदना का बहुत महत्व रहता है। उन्होंने अपने दादा अवधनारायणलाल श्रीवास्तव को नहीं देखा है किंतु वे सात्विक विचारों के पोषक थे। वर्तमान में इनके पिता का देहांत हो चुका है और नाना का स्वर्गवास सन् 1990 में हो गया है। इनकी माता जी का परलोकगमन 19 दिसंबर 2020 को हुआ है।

१.२ शिक्षा:- कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव बचपन से ही किताब पढ़ने के शौकीन रहे हैं। जितेन्द्र सहज और संवेदनशील प्रवृत्ति के हैं। इनकी आरंभिक शिक्षा गांव में ही संपन्न हुई थी । इन्होंने माध्यमिक की परीक्षा अपने गांव के पास के एक कस्बा रुद्रपुर के डी.एन इंटर कॉलेज से वर्ष 1988 में पास की। आगे की शिक्षा के लिए इन्होंने गोरखपुर का चयन किया। सन 1993 में इन्होंने गोरखपुर के ही सेंट एंड्रयू कॉलेज से बी.ए. की डिग्री प्राप्त की थी।

उन्होंने आगे की शिक्षा के लिए देश की राजधानी दिल्ली शहर को पसंद किया। कला, संस्कृति तथा राजनीति के केंद्र जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय(JNU) में M.A की डिग्री के लिए दाखिला लिया। वर्ष 1996 में M.A में प्रथम स्थान प्राप्त किया। हिंदी साहित्य में विशेष रूचि होने के कारण इन्होंने शोध करने का निर्णय लिया। इस बीच नौकरी के लिए भी प्रयासरत रहे थे। लघु शोध करते हुए इन्होंने M.Phil में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी दौरान इनकी पहली नौकरी लग गई। बाद में उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से ही Ph.D (डॉक्टरेट) की उपाधि प्राप्त की। विभिन्न कठिनाइयों के बावजूद इन्होंने शिक्षा प्राप्त करने और पढ़ने की भूख को जीवित रखा।

१.३ व्यवसाय:- कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव संवेदनशील तथा स्वतंत्र विचारों के व्यक्ति हैं। उनके संघर्ष और स्वतंत्र विचार के केंद्र में लोक जीवन है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से M.Phil करने के दौरान वर्ष 1998 में इनकी राजकीय महाविद्यालय, बलुआकोट धारचूला (पिथौरागढ़) में हिंदी के प्रवक्ता के

पद पर नियुक्ति हुई। कुछ समय बाद वर्ष 1999 के सितंबर महीने में राजकीय महिला महाविद्यालय, झांसी में इनका ट्रांसफर हो गया। बाद में वे 26 April 2000 ई.को गोंडा जिले बभनान क्षेत्र के आचार्य नरेंद्र देव पी.जी कॉलेज के हिंदी विभाग में पदस्थ हुए। यहां वे लगभग 3 वर्ष तक अपने ज्ञान से विद्यार्थियों को पल्लवित किया। इस दौरान अध्यापन करते हुए भी, दिए गए सभी उत्तरदायित्व का निर्वाह बड़ी ही सफलतापूर्वक किया।

वर्तमान में देश की राजधानी दिल्ली में स्थित इंदिरा गांधी राष्टीय् मुक्त विश्वविध्यालय के मानविकी विद्यापीठ के हिंदी संकाय में प्रोफेसर के पद पर अपनी सेवा दे रहे हैं। यहां उनकी नियुक्ति 21 अक्टूबर 2003 ई. को प्रवक्ता के रूप में हुई थी। बाद में ये रीडर और फिर प्रोफेसर हुए। इग्नू के हिंदी संकाय के विभिन्न पाठ्यक्रमों का संयोजन, संचालन एवं रख-रखाव का कार्य कर रहे हैं। इन्होंने लगभग अट्ठारह पाठ्यक्रमों का संयोजन किया है। उनके शोध निर्देशन में अब तक 12 विद्यार्थियों को पीएच.डी.उपाधि मिल चुकी है। दो शोधार्थी ने पोस्ट डॉक्टरल शोध पूरा किया है और 8 विद्यार्थियों का पीएच.डी. का शोध कार्य प्रगति पर है। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की रचनाओ पर फिलहाल 13-14 शोधार्थीओ का शोधकार्य चल रहा है।इस बीच विश्वविद्यालय के कुलसचिव भी रहे। इग्नू के पर्यटन एवं आथित्य सेवा प्रबंध विद्यापीठ के निर्देशक रहे। इन दिनों इग्नू के अंतर्राष्ट्रीय विभाग के निर्देशक है।

कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव एक बेहतरीन कवि एवं प्राध्यापक के साथ-साथ कुशल वक्ता भी है। इन्होंने विभिन्न संगोष्ठीयों में हिस्सेदारी और पत्र वाचन किया है। इन्होंने शिक्षण संबंधी कार्यक्रमों, कार्यशालाओं में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इन्होंने विश्वविद्यालय और विश्वविद्यालय के बाहर भी विभिन्न समितियों के सदस्य के रूप में अपने दायित्व का निर्वाह सफलतापूर्वक किया है।

१.४ विवाह एवं परिवार:- प्रसिद्ध कवि, आलोचक, संपादक, लेखक जितेन्द्र का पारिवारिक जीवन सुख शांति और संपन्नता से समृद्ध है। इनका विवाह 12 जनवरी सन 1999 ई.में श्यामली श्रीवास्तव से लगभग 26 वर्ष की आयु में हुआ था। श्यामली श्रीवास्तव का परिवार गोरखपुर के ही रहने वाले है। इनका परिवार स्वतंत्र तथा संवेदनशील विचारों से परिपूर्ण है। इनका दाम्पत्य जीवन खुशहाल है। दाम्पत्य जीवन अधिक खुशहाल होता है जब उन्हें संतानरूपी रत्न की प्राप्ति होती है। कवि के जीवन में चार चांद उनकी दो संतान शांभवी श्रीवास्तव और शताक्षी श्रीवास्तव के रूप में लग गया। इनकी तीन बड़ी बहने हैं, माता और पिता की मृत्यु हो चुकी है। श्रीवास्तव जी का परिवार छोटा एवं संतुलित परिवार है। श्रीवास्तव जी अपनी बेटियों को अच्छी शिक्षा दे रहे हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि इनका परिवार स्वस्थ और समृद्ध पारिवारिक परिवेश का निर्माण करता है, जहां संस्कार का महत्व है, मूल्य का महत्व है, विचारों की स्वतंत्रता है। आधुनिक जीवन में एक स्वस्थ परिवेश के निर्माण में इसकी महत्ता बढ़ जाती है।

समकालीन कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव विशिष्ट प्रतिभा के धनी है। इन्होंने सदा माना कि इनके मस्तिष्क में प्राथमिक चेतना का निर्माण परिवार के ही माध्यम से हुआ है। पारिवारिक वातावरण इनकी लेखनी के लिए सदा ही सहायक रहा है।

१.५ पुरस्कार एवं सम्मान:- कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव के साहित्य सर्जन के केंद्र में कविता एवं आलोचना रही है। उन्होंने 1990 के बाद के उत्तर आधुनिकता, पूंजीवाद, भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावाद के इस माहौल में साहित्य और परिस्थितियों के बीच समन्वय बनाते हुए आज के समाज को दर्पण दिखाया है, देश और समाज में साहित्य के प्रति एक नई नजर कवि ने विकसित की है। इनकी रचनाएं कल्पनाएं मात्र नहीं है, बल्कि समाज के यथार्थ तथा वास्तविक धरातल पर साधारण विषय को भी असाधारण के रूप में प्रस्तुत

करती है। सच कहा जाए तो अपने लेखन को ईमानदारी से समाज को समर्पित करने वाले कवि पुरस्कार एवं सम्मान की लालसा नहीं रखते है। पाठकों का प्रेम उनके लिए सर्वोपरि है। युवा आलोचक डॉ. चैनसिंह को दिए गए एक साक्षात्कार में कहते हैं-"यह सही है कि युवा कवियों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए और जब उन्हें पुरस्कार मिलता है तो प्रोत्साहन मिलता है। लोग उनकी कविताओं को अधिक ध्यान से पढ़ने लगते हैं। उन पर गौर करने लगते हैं। लेकिन यह भी सही है कि बहुत से युवा कवि को जब महत्व मिलता है तो रास्ते से भटक जाते हैं।"[3] लेकिन कवि जितेन्द्र अपने कवि कर्म से कभी भटके नहीं। वे निरंतर रचना-क्रिया से जुड़े रहते हैं।

एक सच्चा एवं सफल कवि वही होता है जो धन एवं मान सम्मान पाने की चाहत नहीं रखता है। वे मानते हैं कि धन और सम्मान के पीछे दौड़ने वाले साहित्यकार स्वार्थी एवं व्यवसायिक हो जाते हैं और वे साहित्य रचना लोभवश ही करते हैं। समाज के यथार्थ से उसका कोई सरोकार नहीं रहता है, उसमें बचती है तो मात्र कोरी कल्पना। फिर कल्पना के केंद्र पर साहित्य सर्जन संभव नहीं।

कवि जितेन्द्र समाज जीवन के मूल्य और साहित्य के मूल्यों को ऊंचा उठाने वाले साहित्यकार है। साहित्यिक ईमानदारी से साहित्य रचने में इनका नाम आदर से लिया जाता है। इसी क्रम में समय-समय पर विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया है। इसका क्रमशः विवरण इस प्रकार है-

1. 'कृति सम्मान' हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा प्रदान किया जाता है। कवि को यह सम्मान उनकी पहली काव्य कृति 'अनभैकथा' के लिए २००४-२००५ में दिया गया था।

2. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ का ‘रामचंद्र शुक्ल पुरस्कार’ वर्ष २००६ में उनके आलोचनात्मक कृति ‘भारतीय समाज की समस्या और प्रेमचंद’ २००२ के लिए प्रदान किया गया था।
3. सन २००५ का ‘भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार’ उनकी ‘तद्भव’ २००५ के अक्टूबर अंक में प्रकाशित कविता ‘जरूर जाऊंगा कोलकाता’ के लिए प्रदान करने का निर्णय लिया गया। यह पुरस्कार उन्हें वर्ष २००६ में दिया गया था। मात्र एक कविता पर सम्मान मिलना कवि एवं कविता के महत्व को दर्शाता है।
4. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ का ‘विजयदेव नारायण साही’ पुरस्कार उन्हें उनकी प्रथम काव्य कृति ‘अनभैकथा’ के लिए वर्ष २००७ में प्रदान किया गया था।
5. उनकी रचना ‘अनभैकथा’ के लिए ही उन्हें भारतीय भाषा परिषद कोलकाता का ‘युवा पुरस्कार’ सन २००७ में दिया गया था।
6. ‘डॉ.रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान’ उनके संपूर्ण आलोचनात्मक लेखन को दृष्टि में रखकर सन २००७ में प्रदान किया गया था।
7. कवि के काव्य सृजन की एक और महत्वपूर्ण कृति असुंदर-सुंदर के लिए वर्ष २०११ में ‘परंपरा ऋतुराज सम्मान’ से उन्हें सम्मानित किया गया था।
8. वर्ष २०११ को ‘देवी शंकर अवस्थी सम्मान’ उनकी आलोचनात्मक कृति ‘आलोचना का मानुष मर्म’ २००९ के लिए दिया गया था।
9. ‘स्पंदन’ कृति सम्मान-2023, कविता संग्रह- ‘सूरज को अँगूठा’, स्पंदन संस्था, भोपाल की ओर से।

(२) कृतित्व

किसी युग या समय की परिस्थितियों को रचनात्मक रूप प्रदान करने में उस देश विशेष के व्यक्तियों एवं समाज की भागीदारी अनिवार्य है। कवि भी समाज का ही हिस्सा होता है और इस दिशा में अपनी सक्रियता के द्वारा अपने युगीन

परिस्थितियों को उजागर करने का महत्वपूर्ण कार्य अपनी कविताओं के द्वारा करता है। परमात्मा ने सृष्टि का निर्माण किया है। कवि भी एक सर्जक होता है। वह सृजन करता है। सृजन का सामान्य अर्थ रचना या फिर निर्माण से लिया जाता है। यह एक ईश्वरीय प्रदत शक्ति है जो सभी मनुष्य के हृदय में रहती है। अवसर पाकर शक्ति अपनी छाप छोड़ती है। कला एवं साहित्य से संबंधित किसी भी वस्तु या विचार के संबंध में नई रचना को पूर्ण सृजित करने की प्रक्रिया सृजन कहलाती है। यह एक मानसिक क्रिया है जो भौतिक संबंधों को जन्म देती है। कवि भौतिक संबंधों को व्यक्त रचना के माध्यम से ही करते हैं। रचना या कृति ही हमारे पवित्र सभ्यता का आधार स्तंभ है।

रचना की प्रक्रिया में नवीनता का गुण अनिवार्य है। साहित्यकार या कवि नवीनता का पोषण अपनी कृतियों में करते हैं, परन्तु इसके लिए अनुकूल परिस्थितियों का होना भी आवश्यक है। रचना का महत्व भी तभी स्थापित होता है जब उसके संदर्भ युग के अनुकूल हो। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव का रचना संसार आधुनिक युग के विभिन्न संदर्भों को अपने साथ लिए चलता है।

जितेन्द्र श्रीवास्तव एक बेहतरीन कवि, कहानीकार, आलोचक एवं संपादक हैं। इनके रचना क्रम को निम्न भागों में बांट सकते हैं-

२.१ काव्य संग्रह

२.२ कहानियां

२.३ आलोचना

२.४ संपादित पुस्तकें

२.५ अन्य

२.१ काव्यसंग्रह

(१) अनभैकथा:- इस काव्यसंग्रह का प्रकाशन २००३ में शिल्पायन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली से हुआ है। 'अनभैकथा' काव्य संग्रह की कविताएं सदन बुनावट की कविता है। इस काव्य संग्रह में एक कविता है 'अनभैकथा'। यह कविता कबीरदास और उनकी मृत्यु स्थल बिहार के मगहर पर केंद्रित है। कबीर के समय समाज में धर्माडम्बर और बाह्याडम्बर का प्रचलन था। यह धारणा बनी हुई थी कि काशी में मरने से स्वर्ग और मगहर में मरने से नरक मिलता है। इस धारणा को तोड़ने के लिए कबीर जी जीवन भर काशी में रहे और अपने जीवन के अंतिम दिनों में मगहर जाकर अपना शरीर त्याग दिया। कबीर दास पाखंड के विरोधी थे। जाति-पाति, छुआछूत, हिंसा और धर्म के नाम पर लड़ने वाले हिंदू-मुसलमानों को कई बार फटकार चुके थे। आज उसी मगहर के 'बहराइच' में मेला लगता है, सैकड़ों नर-नारी 'वाले मियां की बारात' में शामिल हो रहे हैं। कवि कहते हैं-

"वाले मियां की बारात

हर साल सजती है वहां

हर साल पहुंचते हैं हजारों हिंदू-मुसलमान

सब वहां जाकर मानते हैं मनौतियां

और उन्हें विश्वास होता है

पूरी होगी उनकी इच्छा

और जो न हो पूरी

तो उन्हें दाता की शक्ति पर नहीं

अपनी इबादत पर शक होता है।"[4]

कबीर के नाम पर उस स्थान पर मंदिर और मस्जिद दोनों बने हैं। कबीर दास ने हिंदू और मुसलमान को जीवन पर्यंत सत्य का आलोक दिखाया था। आज उनकी वाणी का न कोई महत्व रह गया और न ही कोई मूल्य। जिस अंधविश्वास और रूढ़ियों के वे आजीवन विरोधी रहे, वह सब उन की दरगाह पर पनप रही है। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव ने इस चिंता को बखूबी एवं सहजता से व्यक्त किया है। 'अनभैकथा' काव्य संग्रह को कई पुरस्कारों से नवाजा गया है। इस काव्य संग्रह को २००३ में 'कृति' सम्मान मिला है।

(२)असुंदर-सुंदरः- इस कविता-संग्रह का प्रकाशन २००८ में भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से हुआ है। काव्य विषय की विविधता विद्यमान है। असुंदर-सुंदर कविता संग्रह के केंद्र में एक गूंगा-बहरा और लंगड़ा 'बोधू' नामक युवक है, जो चरवाहा है। उसके बदन की हड्डियां साफ़ गिनी जा सकती थी। उसकी आंखें धस गई थी। ३५ की उम्र में भी ५० का लगता था। गूंगे बोधु की दुर्दशा और मालिक की अमानवीयता स्पष्ट देखी जा सकती है। मानवता को शर्मशार और तार-तार करने वाले चित्रों के बाद कवि की दृष्टि में सौंदर्य के प्रतिमान ही बदल जाते हैं। श्रेष्ठ सौंदर्य के दर्शन संघर्ष के बगैर अधूरा है। बोधु कर्मशील श्रमजीवी है। असुंदर-सुंदर कविता का अंतिम पंक्ति बहुत ही महत्वपूर्ण बन जाती है-

"मैं नहीं जानता उसे परख थी या नहीं असुंदर-सुंदर की

उसका कोई सौंदर्यबोध था भी या नहीं

पर जब भी वह देता था पानी फुलवारी में

लगता था हंसते थे उसके रोम-रोम तक।"[5]

श्रम के कारण ही 'पीले दांत और झोसाये चेहरे' के साथ बोधु असुंदर से सुंदर प्रतीत होने लगता है। गो-गो करने वाला और लाठी पिटने, मां-मां चिल्लाने वाला, हाथ नचाकर बच्चों को डराने वाला कब सौंदर्य की प्रतिमूर्ति बन जाता है, पता

ही नहीं चलता। लकी चौधरी जितेन्द्र श्रीवास्तव पर लिखे अपने आलेख ‘यथार्थ से रूबरू कवि के सौंदर्य प्रतिमान’ में लिखते हैं कि- "चेहरे पर दिखने वाला यह पानी श्रम करने वाले एक कर्मशील मनुष्य का है और उसमें बची मानवता की गवाही देता है उस संकोच और शर्म को जो इंसान को परजीवी नहीं बनने देता, उसे शोषण के रास्ते की ओर नहीं बढ़ने देता।"[6] मेहनत और मजदूरी के पसीने के बिना सौंदर्य का कोई मूल्य नहीं। इस संग्रह में एक कविता उर्दू के प्रसिद्ध साहित्यकार ग़ालिब की ऐतिहासिक यात्रा से संबंधित ‘जरूर जाऊंगा कोलकाता’ है। भारत में नवजागरण और आधुनिकता का केंद्र कोलकाता था। कवि गहरी बेचैनी है कि गालिब के समय की आत्मा के वृक्ष आज अदृश्य हो रहे हैं। इस स्मृति यात्रा के तल में दिल्ली और कोलकाता इन दोनों शहरों के बीच एक चुपचाप तनाव दिखाई पड़ता है। वर्तमान में सामाजिक, राजनीतिक संदर्भ में इस कविता की प्रासंगिकता ओर बढ़ जाती है।

(३)बिल्कुल तुम्हारी तरह:- इस कविता संग्रह का प्रकाशन सन् २०११ में भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली द्वारा किया गया है। प्रस्तुत संग्रह कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव ने अपनी पत्नी श्यामली जी को समर्पित किया है। यह काव्य संग्रह की अधिकांश कविताएं स्त्रियों के जीवन से सरोकार रखती है। वे दूर पहाड़ों पर रहते हुए भी अपनी पत्नी को बार-बार याद करते हैं। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव बिल्कुल एक स्त्री की तरह सोचना और काम करना चाहते हैं। कवि सभी दुखों में आगे बढ़कर अपनी पत्नी का हाथ थाम लेना चाहते हैं। वे स्त्री को पुरुष की दृष्टि से नहीं परंतु मित्र की दृष्टि से देखने के समर्थक है। उनका मानना है कि संग साथ चलने से ही जीवन सरल बनता है। संग-संग चलने से ही समाज में बदलाव दिखेगा।

"मैं जानता हूं, यह अपराध है

पर क्या करूं

कहां से लाऊं

अपने भीतर एक स्त्री की आत्मा !

वह भी ऐसे समय में

जब बच्चियां मारी जा रही है कोख में ही"[7]

वर्तमान में स्त्री की स्थिति अत्यंत सोचनीय, विचारणीय है। उसे अपने जीवन के प्रत्येक स्तर पर प्रताड़ित होना पड़ता है। कवि के अनुसार यदि हमारे अंदर स्त्री की आत्मा होती है तो हम बच्चियों को मां के कोख में नहीं मारते, भ्रूण हत्या नहीं करते। आज का समाज असंवेदनशीलता और अमानवीयता की ओर बहुत तेजी से बढ़ रहा है। अमानवीय और असंवेदनशील समय में कवि प्रतिज्ञा करता है कि वह केवल अपनी पत्नी की ही सुनेगा। ठीक उसी तरह जिस तरह उनकी पत्नी सुनती है अपने पति की। स्त्री को सुनना और उससे बोलने का अवसर प्रदान करना स्त्री की स्वतंत्र अस्मिता को स्वीकार करना है। उसे महत्व देना है और कवि उसकी अस्मिता के महत्व को स्वीकार करते हुए उसे बोलने कुछ कहने का अवसर प्रदान करना चाहते हैं।

(४)इन दिनों हाल-चाल:- इस कविता संग्रह का प्रकाशन यश पब्लिकेशन दिल्ली द्वारा सन २०११ में किया गया है। यह इनकी शुरुआती दिनों में लिखी कविताओं का संग्रह है। कोलकाता के युवा आलोचक मृत्युंजय पांडे के अनुसार, "इसके पहले वर्ष 2000 में इलाहाबाद से प्रकाशित साहित्य पत्रिका कथ्य रूप की आनुषंगिक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हो चुकी है। संग्रह की हर कविता के नीचे रचना का समय दिया हुआ है। इस समय सीमा के सहारे हम युगीन परिस्थितियों से दो-चार हो सकते हैं। इसमें 1991 से लेकर 1996 तक की कविताएं संकलित है।"[8] १९९० के बाद भारत में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक धरातल पर अनेक परिवर्तन देखे जा सकते हैं। भूमंडलीकरण का समय आरंभ होता है, उपभोक्तावाद को बढ़ावा मिलता है। विकास की एक नई परिभाषा में कंक्रीट का जंगल फलने फूलने लगा। जीवन के आवश्यक संसाधनों जल और जमीन पर बहुराष्ट्रीय कंपनियां

कब्जा करने लगी थीं। देश की राष्ट्रीयता और संप्रभुता पर खतरा मंडराने लगा था। पूंजी अतिशक्तिशाली और आर्थिक ताकतें ओर अधिक ताकतवर हो गई थीं। फल स्वरूप आम आदमी पर संकट मंडराने लगा। शक्तिशाली एवं विकसित राष्ट्रों ने भारतीय राजनीति को परोक्ष या फिर अप्रत्यक्ष ढंग से नियंत्रित करना शरू कर दिया था। आलोचक अरुण होता इस संदर्भ में ध्यानाकर्षित करते हैं कि- "भूमंडलीकरण की आंधी के बाद दुनिया को दो हिस्सों में बांट दिया गया है। पहले हिस्से में सट्टेबाजीयां, भ्रष्टाचार, अपराधीकरण आदि को फलने-फूलने दिया गया ताकि कॉरपोरेट् पूंजीवाद का उत्तरोत्तर विकास हो। दूसरी ओर क्रय शक्ति के अभाव में रहने वाली बहुसंख्यक आम जनता को पूंजी ने निरर्थक साबित किया है। 'वैश्विक गाँव' में केवल वे शामिल हैं जिनमें क्रय शक्ति मौजूद है। पूंजी ने मीडिया को अपना दास बना लिया तो मीडिया दास ने भूमंडलीकरण और पूंजी को महिमामंडित करने का बीड़ा उठा लिया।"[9]

सन १९९४ में रचित कविता 'इन दिनों हाल-चाल' में देश के किसान, मज़दूरों का हाल-चाल व्यक्त हुआ है-

"काप रहा है दिन

और धूप भी पियराई है

न जाने कौन ऋतु आई है।"[10]

इन पंक्तियों में किसान, मजदूरों की दशा को सरलता से समझा जा सकता है। भूमंडलीकरण के कारण ग्रामीण जीवन में कितना परिवर्तन आया है इसे कवि, किसान, मज़दूर और देश की आम जनता ही महसूस कर सकती हैं। बाजारवादी व्यवस्था में बाजार चाहता है कि जनता के विचारों का अंत हो जाए। इसलिए कवि के प्राण ऐसी स्थिति में भयभीत हो उठते हैं। विज्ञापन के इस युग में कवि भूमंडलीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति की गलत नीतियों से जूझना चाहता है। उसके पास अपनी भाषा, मूल्य, संस्कृति और विरासत है और अपने प्रेम पर

श्रद्धा। इन्हीं औजारों के सहारे कवि संघर्षरत होना चाहते है जिन्हें भूमंडलीकरण उससे छीन लेने की तमाम साजिश रचता आ रहा है। कवि कहते हैं कि-

"फिर भी हम
अपनी भाषा में चिल्लाएंगे
दर्द के विरुद्ध
विद्रोह के स्वर में हमारे टूटे-फूटे शब्द
तुम्हारी संस्कृति से टकराएगे।"[11]

उपभोक्तावादी संस्कृति कोरोना की तरह एक महामारी के रूप में अपना विस्तार कर रही है। चारों ओर जीवन मूल्यों का पतन हो रहा है। सुख-दुख, प्रेम-हिंसा आदि भी बेचकर बाज़ार से स्वार्थ पोषित लाभ हासिल किया जा रहा है। कवि की चिंता संस्कृति बचाने की है। प्रेम और भाईचारे के इस देश में संस्कृति को प्रेम से ही बचाया जा सकता है। कवि का सबसे बड़ा गुण है कि साधारण को असाधारण, महत्वहीन को भी महत्वशील बना देते हैं। मीडिया निष्णात दिनेश श्रीनेत लिखते हैं कि- 'जितेन्द्र अपनी कविताओं में वह संभव करते हैं, जिसके बारे में बहुत से कवि सिर्फ सोचते रह जाते हैं।'(फ्लैप से)

(५)कायांतरण:- कविता संग्रह का प्रकाशन २०१२ में किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा किया गया है। इस संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता इसका शीर्षक 'कायांतरण' ही है। इसमें हमारे देश की राजनीति से संबंधित अनेक कविताएं है जो समाज में वंचित स्त्री तथा पुरुष के अनेक दृश्य उपस्थित करती है। बाजारवाद के इस युग में कवि की वास्तविक चिंता मनुष्यता, समाज, परिवार और वर्तमान से जुड़ने की इच्छा है क्योंकि इस जुड़ाव से मनुष्य का जीवन विस्तार, विकास और ऊष्मा ग्रहण करता है। मनीषा जैन ने अपने आलेख कायांतरण से आगे आत्मांतरण की कविताओं में लिखती है कि-"जितेन्द्र की नई कविताओं का संग्रह 'कायांतरण'

बिल्कुल नए भाव बोध, नई बिम्ब लेकर आया है। ये कविताएं किसी परिपाटी के सांचे में नहीं बल्कि बिल्कुल प्राकृतिक रूप से रची गई है तथा समाज को नया विस्तार एवं विकास देती हैं।"[12]

हमारे भारत देश की राजनीति का यह सत्य है कि जिस प्रतिनिधि का हम चुनाव कर दिल्ली हमारी समस्याओं के समाधान हेतु भेजते हैं, वह साधारण प्रतिनिधि दिल्ली की गर्म कुर्सी पर बेठते ही उसका स्वभाव, विचार तथा पहनावा बदल जाता है। कुल मिलाकर उसकी पुरी काया बदल जाती है, उसकी नजर न तो गरीब भूखे लोगों को देख पाती है और न पहचान पाती है और न ही उनके कानों तक उसकी आवाज पहुंच पाती है। हमारे ही बीच का एक छोटा- सा आदमी दिल्ली पहुंचते ही ठीक उसी तरह बदल जाता है, जिस तरह "आत्मा" अपना वस्त्र बदल देती है। कविता की कुछ पंक्तियों इस प्रकार है-

"पिछले दिनों आया है एक आदमी
जिसका चेहरा मोहरा मिलता है
सपनों को मुक्त कराने दिल्ली गए आदमी से
वह बात - बात में वादें करता है
उन तक पहुंचती है एक खबर
कि दिल्ली में एक और दिल्ली है -लुटियन की दिल्ली
जहां पहुंचते ही आत्मा अपना वस्त्र बदल लेती है।"[13]

कविता की पंक्तियां केवल पंक्तियां भर नहीं है, परन्तु आज के समाज और सत्ता की वास्तविकता है।

(६)कवि ने कहा:- इस कविता संग्रह का प्रकाशन २०१६ में किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली से हुआ है। इस संग्रह में कवि जितेन्द्र की प्रतिनिधि कविताओं को

स्थान दिया गया है। इसके साथ ही २०१२ से २०१६ के दौरान लिखे गए ९ असंकलित रचनाओं को भी स्थान दिया गया है। 'कवि ने कहा' किताबघर प्रकाशन की एक श्रृंखला का हिस्सा है। इस श्रृंखला में ३० से अधिक कवियों की कविताओं का योगदान रहा है। इस पुस्तक में समाहित कविताएं स्मृतियां संजोने वाली है। हमारा समय स्मृति लोप का समय है। कवि यह मानते हैं कि स्मृतियां मनुष्य को संवेदनशील और मानवीय बनाती है। उसे उसके दायित्व, जिम्मेदारी और महत्व का बोध भी कराती है। स्मृतियों से कटा हुआ व्यक्ति समय और समाज के बदलाव को चिन्हित कर पाने में सक्षम नहीं होगा। कवि जितेन्द्र के काव्यगत विविधता और शिल्प की संरचना के कारण यह संकलन सुरुचिपूर्ण एवं पठनीय बन जाता है।

(७)बेटियां:- यह कविता संकलन २०१९ में पाठकों के समक्ष आया था। इस संकलन का प्रकाशन के के पब्लिकेशन नई दिल्ली ने किया था। इस संकलन का संपादन आलोचक एवं कोश निर्माता कमलेश वर्मा और उनकी पत्नी सुचिता वर्मा ने किया था। संकलन को प्रख्यात कवि रमाशंकर विद्रोही की कविता की २ पंक्तियों को लेकर संपूर्ण बेटियों को समर्पण किया गया है।

संकलन में कवि की २५-३० वर्षों के अंतराल में लिखे गए 'बेटियों' से संबंधित कविताएं है। हिंदी साहित्य के इतिहास में पिछले १००० साल के इतिहास में बेटियों पर लिखा गया इस प्रकार का पहला संकलन है। इस संकलन का महत्व इस बात में है कि यह स्त्री जो कभी बेटी होती है और जीवन के विभिन्न स्तरों पर बेटियों का उत्तरोत्तर विकास होता है और वह कभी बहन बनती है, पत्नी बनती है, मां बनती है, दादी-नानी बनती है जीवन के कठिन से कठिन समय में भी संघर्ष करती है। अपने जीवटता और अपनी जिजीविषा दिखाती है। बेटियां पराई नहीं होती परंतु वह तो देवी लक्ष्मी का रुप होती है, चाहे वह किसी भी घर में क्यों न जाए। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव युवा आलोचक डॉ. चैन सिंह मीणा को दिए गए एक साक्षात्कार में कहते हैं कि- "बेटियों पर कविताएं जो है वो स्त्री

जीवन का एक तरह से विस्तार है और इस अर्थ में बहुत महत्वपूर्ण है कि स्त्री विषय पर कविताओं की एक सीमा हो सकती है लेकिन बेटियों पर लिखी कविताओं को अगर देखें तो स्त्री विमर्श का एक नया स्वर वहां से निकलता है। देखिए, कभी बात कीजिए सामान्य स्त्री के बारे में तो प्रत्येक व्यक्ति आप से बहस कर लेगा परंतु बेटियों को लेकर सभी लोग बहुत ही संवेदनशील होते हैं। तो हमें लगता है कि स्त्री विमर्श को नए ढंग से समझने के लिए जरूरी है कि बेटियों के प्रति लोगों के मन में सकारात्मक भाव पैदा किए जाए क्योंकि बेटियां सबकी अपनी कमजोरी होती है। बेटियों का सुख सब चाहते हैं।"[14]

यह काव्य संकलन स्त्री विमर्श को एक नया आयाम प्रदान करता है तभी तो कवि कहते है कि-

"जितनी हंसी होती है बेटियों के अधर पर

उतनी उजास होती है पिता के जीवन में

जो न हंसे बेटियां तो

तो अंधेरे में खो जाते हैं पिता"[15]

(८)उजास:- 'उजास' कविता संग्रह का प्रकाशन सेतु प्रकाशन दिल्ली द्वारा २०१९ में किया गया था। इस काव्य संग्रह की कविताएं कवि के नए भाव-बोध, आशा एवं ताजगी की कविताएं है। 'उजास' काव्य संग्रह कवि की अनुपलब्ध पहली ३ काव्य संग्रह 'अनभैकथा', असुंदर-सुंदर और 'बिल्कुल तुम्हारी तरह' का संपूर्ण संकलन है। इस संकलन के विषय में अमिताभ राय लिखते हैं कि-"1990 के आसपास का समय भारतीय समाज और राजनीति में व्यापक परिवर्तन और उठापटक का था। व्यवस्था और समाज के स्तर पर हो रहे परिवर्तनों के बीच साहित्यिक चेतनाओं और चेष्टाओं का विकास हो रहा था। कवि के रूप में जितेन्द्र श्रीवास्तव की प्रारंभिक कविताएं नई साहित्यिक चेतना और चेष्टाओं की कविताएं

है। इसलिए इनकी प्रारंभिक कविताओं में विषय भी बहुत है और उन विषयों के साथ कवि के ट्रीटमेंट अनेकवर्णीय है। कुल मिलाकर आरंभिक कविताएं नई संवेदनात्मक संरचना के तलाश की कविताएं प्रतीत होती है।"[16]

कवि की कविताएं अपने समय की आवाज़ है। समकालीन समय में मनुष्य के व्यक्तित्व का लुप्त होता जा रहा है। मनुष्य के लिए मनुष्य नहीं रह गया है परन्तु एक नाम है जिससे वह पहचाना जाता है। उसके लिए सामाजिक ज़िम्मेदारी कुछ भी नहीं है। इस संदर्भ में कवि जितेन्द्र की इन पंक्तियों पर गौर किया जा सकता है-

"उन्हें भी नहीं पता

जो जिम्मेदारियों को माया कहते है

अपने ही अंधेरे में लोप कर रहे है

अपनी आत्मा का"[17]

कवि को मनुष्य की आत्मा की चिंता है। वह अपनी आत्मा के साथ ही मनुष्यता की आत्मा बचाना चाहता है क्योंकि अंधेरे कुए में फंसे आत्मा को निकालना सीधे पेड़ पर चढ़ने के समान कठिन है।

(९)सूरज को अंगूठा:- इस कविता संग्रह का प्रकाशन २०२० में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा किया गया है। इस कविता संग्रह को समकालीन कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर अपने गुरुवर प्रोफेसर केदारनाथ जी की स्मृति को समर्पित किया गया है। इस संग्रह में भी विषय की विविधता विद्यमान है। लेकिन अधिकांश कविताएं दलितों एवं वंचितों पर ही केंद्रित है। इस संग्रह के पिछले पृष्ठ पर लिखा है कि "मनुष्य और मनुष्यता की चिंता करने के क्रम में यह कवि सत्ताकांक्षी राजनीति एवं वर्चस्ववादी सामाजिक संरचना की गहरी पड़ताल करता

है। यह अकारण नहीं है कि वह बात करता है सपनों की, इच्छाओं की एवं चुप्पी के समाजशास्त्र की।"[18]

कवि को आज भी एक नए कबीर की प्रतीक्षा है जो सूरज को अंगूठा दिखाएगा। आम आदमी अपनी समस्या का अंत चाहता है लेकिन जो समाज एवं सत्ता के केंद्र में है वह समस्याओं को जड़ से मिटाने का प्रयास नहीं करते हैं क्योंकि कुल मिलाकर समस्या है तभी नेता है, तभी तक उनकी दाल-रोटी चलती रहेगी। कवि को आशा है कि जनता जरूर जीतेगी। वह कहते हैं कि-

"अभी जिन रास्तों पर बची है पराजय की स्मृतियां

उन पर किसी दिन किसी बस से गुजरते हुए

लोगों को दिखेगे कुछ बच्चे

लाल गुद्दे वाले अमरूद खाते हुए

ठहाका लगाते हुए

पूर्वजों की पराजय के इतिहास को धागते हुए

माथे पर चढ़ आए सूरज को अंगूठा दिखाते हुए।"[19]

कितने ही पराजय के बाद भी कवि न ही अपने आत्मबल को गिरने देता है और न ही आम जनता के आत्मबल को टूटने देता है। कवि जितेन्द्र विश्वास दिलाते है कि जीत पूंजी की नहीं बल्कि आम इंसान के श्रम की होगी।

(१०)रक्त सा लाल एक फूल:- इस कविता संग्रह का प्रकाशन आईसेक्ट पब्लिकेशन भोपाल से २०२० दिसंबर में हुआ है। यह नया संग्रह भी एक चयनीत है जिसमें कुछ संकलित कविताएं भी शामिल है। भूमंडलीकरण, बाजारवाद तथा सत्ता का पूंजी में विलय और आर्थिक संकट के इस दौर में तरह-तरह की समस्याएं आई है। जीवन के समयहीन समय में आर्थिक उदारीकरण एवं बेरोजगारी की समस्या

प्रबल है। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव उन कवियों में से है जो निराशा एवं हताशा के इस दौर में भी उम्मीद और मनुष्य की मनुष्यता को बचाये रखने की जिद रखते हैं। कवि को कुछ पंक्तियों को उदाहरण रूप देख सकते हैं-

"समय के साथ छूट जाते हैं बहुत से लोग
समय के साथ भुला जाते हैं बहुत से लोग
पर कुछ न कुछ होता है ऐसा
जिस पर नहीं चढ़ती समय की धूल
वर्षों बीत गए पहाड़ से लौटे
मैं नहीं लौट पाया पहाड़ से
पर आज भी मेरी आंखों में बचा है
रक्त साल लाल एक फूल बुरूस का।[20]

कवि का भाव प्रबल है। समय की भाग दौड़ में कवि की आंखों में चमक बरकरार है। उनके शिष्य शेर सिंह अपने फेसबुक पर लिखते हैं कि-"इस संग्रह की कविताओं में कवि का समाज के प्रति व्यापक दृष्टिकोण शामिल है। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, किसानों की समस्या, युवा बेरोजगारों की समस्या, प्रेम की समस्याएं, बेटियों के लिए लिखी गई कई कविताएं इस संग्रह में शामिल है।"[21] यह कथन उनके संग्रह की विविधता को दिखाता है जो विश्व में हो रहे बदलाव के प्रति कवि की मूल चिंता की ओर ध्यान दिलाता है।

(११)स्त्रियां कहीं भी बचा लेती है पुरुषों को:- इस कविता संग्रह का प्रकाशन २०२१ में प्रलेक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड महाराष्ट्र से हुआ। इस कविता संग्रह में स्त्री-जीवन की कविताओं का समावेश हुआ है। कवि ने यह संग्रह अपनी नानी और मां की पुण्य स्मृति को समर्पित किया है। ‘स्त्रीयां कहीं भी बचा लेती है पुरुषों

को' प्रसिद्ध कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं का एक अनूठा और जरूरी संग्रह है। बिल्कुल आरंभ से ही स्त्री जीवन कवि जितेन्द्र की कविताओं में प्राणवस्तु की तरह समाया है। उन्होंने हिंदी कविता का आयतन विस्तृत करने वाली 'सोनचिरई' जैसी कविता का सृजन अपने विद्यार्थी जीवन में ही कर दिया था। कई गंभीर आलोचकों ने 'सोनचिरई' को 21वीं सदी की युवा कविता का प्रस्थान बिंदु भी माना है। कहने की जरूरत नहीं है कि यह कविता इस संग्रह का भी जीवद्रव्य है। जितेन्द्र श्रीवास्तव के संग्रह में भी स्त्री जीवन के सुख-दुख और संघर्ष को वाणी देने वाली ५३ कविताएं संकलित है। इन कविताओं की विषय विविधता देखते ही बनती है। संग्रह की शीर्षक कविता पितृसत्ता का सूक्ष्म प्रत्याखायन करते हुए साहचर्य के नए सौंदर्यशास्त्र की ओर संकेत करती है। इस संग्रह में कई कविताएं बेटियों पर केंद्रित है जो स्त्री विमर्श के इस दौर में सर्वथा नई इमारत की तरह है। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि जितेन्द्र इतिहास के संवेदनात्मक परिवर्तन की अचूक पहचान करने वाले कवि हैं। गहरी इतिहास दृष्टि से लैस उनकी कविताओं में व्यक्त जीवन इस प्रकार सहायता से अभिव्यक्त होता है कि पाठक चमत्कृत हुए बिना रह नहीं सकते।

यह संग्रह तपते रेगिस्तान में सरोवर की तरह है। इसे मनुष्यता की औषधि भी कह सकते हैं। इस संग्रह की कविताएं अपने पाठकों के हृदय के रसायन को अनिवार्य रूप से बदलकर उसे पुनर्नवा करेगी, इसमें कोई दो मत नहीं है।

(१२)जितनी हंसी तुम्हारे होठों पर:- जितेन्द्र श्रीवास्तव प्रेम के गायक है। उनकी व्यापक ख्याति का एक बड़ा कारण उनकी प्रेम कविताएं भी है। उनकी कविताओं का रसायन प्रेम, परिवार, समाज और राजनीति के गहरे मिश्रण से तैयार हुआ है। 'बिल्कुल तुम्हारी तरह' के ११ वर्ष बाद उनकी प्रेम कविताओं का यह दूसरा संग्रह प्रकाशित हो रहा है। इस संग्रह में १९९० से लेकर २०२१ तक की कविताएं संकलित है। प्रेम कविताओं के अकाल वेला में इस प्राणवान संग्रह का प्रकाशित होना रेगिस्तान में सरोवर मिलने जैसा है। इस संग्रह की कविताएं उम्र की परिधि

लाधते हुए हर उम्र के पाठकों को अपने गहन आकर्षण में बांध लेती है। भाव, भाषा और अभिव्यक्ति का ऐसा अपूर्व संयम दुर्लभ है। पूर्व में पत्रिकाओं में प्रकाशित इस संग्रह की कई कविताएं प्रेमियों के लिए औषधि का कार्य कर चुकी है। बहुत से पाठक उन कविताओं को मन में सहेज कर रखे हुए हैं। जितेन्द्र श्रीवास्तव की प्रेम कविताएं साहचर्य के नए सौंदर्य शास्त्र की एक सर्वथा नई पृथ्वी का संधान करती है। इन कविताओं को पढ़ने के बाद पाठक अपने को किसी कल्पना लोक में विलीन नहीं करता बल्कि वह जीवन के प्रति अधिक सकारात्मक हो उठता है। ये कविताएं रागात्मकता के जीव द्रव्य से भरी हुई है।

"नींद उतर आई है

पलकों से

होंठ बुदबुदा रहे हैं कोई प्रार्थना

इस ब्रह्मबेला में

शब्द ब्रह्म घुल रहा है सृष्टि के कण-कण में

मैं खोलता हूं आंखें

सबसे पहले याद करता हूं तुम्हारा चेहरा

जहां पानी है मेरे जीवन का।"[22]

२.२ <u>कहानियां</u>

मनुष्य जीवन में समय का काफ़ी अभाव है। समय के अभाव में आख्यायिका का वाचन नहीं कर पाता है। अपनी मानसिक तृप्ति के लिए उसने छोटी आख्यायिकाओं को चुना है। इसीलिए आजकल लघु कथाओं का काफी जोर पर है। पाठक कम वक्त में ही कथा रस से सराबोर होना चाहता है। कहानी सम्राट मुंशी प्रेमचंद का

कथन इस संदर्भ में उचित जान पड़ता है- "कहानी वह ध्रुपद की तान है जिसमें गायक महफिल शुरू होते ही अपने संपूर्ण प्रतिभा दिखा देता है। एक क्षण में चित्त को इतने माधुर्य से परिपूरित कर देता है जितना रात भर गाना सुनने से भी नहीं हो पाता।”[23]

कविता की भांति ही कहानी भी जीवन का अभिन्न हिस्सा है। प्रत्येक मनुष्य प्रतिदिन सैकड़ों कहानियों के बीच से गुजरता है। कहानीकार जितेन्द्र भी अपने जीवन के विभिन्न संघर्षों में जीवन के विभिन्न कहानियों से गुजरते हैं। कहानियों से गुजरने के साथ ही इनकी पहली कहानी संग्रह ‘फिर भी यह मन.....’ दिसंबर, २०२० में ऑनलाइन नॉट नल से प्रकाशित हो चुकी है। यह लेखक की कहानियों का एक मूल्यवान संग्रह ह। इसमें प्रेम, संघर्ष और मनुष्य जीवन को विविध संदर्भ में देखा गया है। इस कहानी संग्रह की 7 कहानियों में से 5 कहानियां पाठकों के भीतर प्रेम का आवेग अत्यंत तीव्र कर देती है। पाठक को यह कहानी पहले से अधिक सुंदर मनभावन लगने लगती है। उससे सोचने का पूरा दृष्टिकोण बदल जाता है।

२.३ <u>आलोचना</u>

‘आलोचना’ का अर्थ होता हैं किसी विषय या वस्तु के उसके लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, उसके गुण एवं दोषों की समीक्षा करने वाली एक साहित्यिक विधा है। आलोचना का उद्देश्य यही खोजना हैं कि कवि या लेखक की कल्पना में मनुष्य के हृदय के किस विशेष रूप ने घनीभूत होकर अपने अनंत वैचित्य के प्रकाशन को सौंदर्य द्वारा प्रस्तुत किया है। वास्तव में आलोचना का कार्य कवि या लेखक की रचना में मानव हृदय कितना और किस सौंदर्य के साथ प्रस्फुटित हुआ है। इस तथ्य का उद्घाटन करना है।

प्रत्येक रचना चाहे वह कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना में रचनाकार का कोई न कोई लक्ष्य निहित रहता है। आलोचक अपनी आलोचना द्वारा लेखन का एक

प्रकार से पूर्ण संस्कार करता है। आलोचक जितेन्द्र श्रीवास्तव आलोचना की नई परिभाषा गढ़ते है। उनके आलोचना कर्म के बिंदु इस प्रकार है-

1. भारतीय समाज की समस्याएं और प्रेमचंद,२००२,शब्द सृष्टि प्रकाशन,दिल्ली
2. भारतीय राष्ट्रवाद और प्रेमचंद,२००४, प्रकाशन संस्थान,नई दिल्ली
3. शब्दों में समय,२००८, मानव प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
4. आलोचना का मानुष मर्म, २००९, मानव प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
5. भारतीय समाज:राष्ट्रवाद और प्रेमचंद, २०१२, सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली
6. सर्जक का स्वप्न,२०१३, यश पब्लिकेशन,दिल्ली
7. नए विमर्श और समकालीन कविता, २०१३, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली
8. उपन्यास की परिधि, २०१५, साहित्य भंडार, इलाहाबाद
9. रचना का जीवद्रव्य, २०१७, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली
10. कहानी का क्षितिज, २०१९, साहित्य भंडार, इलाहाबाद
11. कविता का घनत्व, २०२१, सेतु प्रकाशन दिल्ली

२.४ <u>संपादित पुस्तक</u>

आधुनिक समय में संपादित पुस्तकों के महत्व में वृद्धि हो रही है। संपादक जितेन्द्र श्रीवास्तव के संपादित पुस्तकों की सूची बड़ी है। वह इस प्रकार है-

1. भारतीय उपन्यास विवेचना,२००५, इग्नू,नई दिल्ली
2. समाचार पत्र और फीचर लेखन,२००८, इग्नू, नई दिल्ली
3. विभिन्न क्षेत्रों में और विशिष्ट विषयों पर फीचर लेखन,२००८, इग्नू, नई दिल्ली
4. विशिष्ट वर्गों के लिए लेखन,२००८,इग्नू, नई दिल्ली
5. साहित्यिक लेखन साक्षात्कार और व्यक्ति चित्र,२००८, इग्नू, नई दिल्ली
6. ध्वनि संरचना,२०१०,इग्नू, नई दिल्ली
7. रूप रचना, २०१०, इग्नू, नई दिल्ली

8. वाक्य संरचना,२०१०, इग्नू, नई दिल्ली
9. शब्द और अर्थ, २०१०,इग्नू, नई दिल्ली
10. हिंदी का सामाजिक संदर्भ,२०१०,इग्नू, नई दिल्ली
11. लिपि और वर्तनी,२०१०,इग्नू, नई दिल्ली
12. प्रेमचंद: दलित जीवन की कहानियां, २०१२, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
13. प्रेमचंद: दलित एवं स्त्री विषयक विचार, २०१२, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
14. प्रेमचंद: हिंदू मुस्लिम एकता संबंधी कहानियां एवं विचार, २०१२, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली
15. प्रेमचंद स्त्री जीवन की कहानियां,२०१२, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
16. प्रेमचंद स्वाधीनता संबंधी कहानियां, २०१३, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
17. प्रेमचंद किसान जीवन संबंधी कहानियां और विचार, २०१३, भारतीय ज्ञानपीठ,नई दिल्ली
18. कहानियां रिश्तो की, २०१४, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
19. प्रेमचंद कहानी विविधता, २०१४, इग्नू, नई दिल्ली
20. हिंदी कहानी विविधता, २०१४, इग्नू,नई दिल्ली
21. भारतीय कहानी विविधता, २०१४, इग्नू, नई दिल्ली
22. कहानी के सिद्धांत और स्वरूप भाग- १,२०१५, इग्नू, नई दिल्ली
23. कहानी के सिद्धांत और स्वरूप भाग- २, २०१५, इग्नू, नई दिल्ली
24. विश्व साहित्य में कहानी, २०१५, इग्नू, नई दिल्ली
25. भारतीय साहित्य में कहानी,२०१५, इग्नू, नई दिल्ली
26. हिंदी साहित्य में कहानी, २०१५, इग्नू, नई दिल्ली
27. प्रेमचंद की कहानियां खंड-१, २०१६, इग्नू, नई दिल्ली
28. प्रेमचंद की कहानियां खंड -२, २०१६, इग्नू, नई दिल्ली
29. प्रेमचंद की कहानियां खंड- ३, २०१६, इग्नू, नई दिल्ली
30. प्रेमचंद की कहानियां खंड -४, २०१६, इग्नू, नई दिल्ली

31. हिंदी कहानी खंड -१,२०१६, इग्नू, नई दिल्ली
32. हिंदी कहानी खंड- २,२०१६, इग्नू ,नई दिल्ली
33. हिंदी कहानी खंड- ३, २०१६, इग्नू ,नई दिल्ली
34. हिंदी कहानी खंड- ४, २०१६, इग्नू ,नई दिल्ली
35. हिंदी कहानी खंड- ५,२०१६, इग्नू, नई दिल्ली
36. मलयालम, कन्नड़, तमिल और तेलुगु भाषा की कहानियां खंड-१,२०१७, इग्नू, नई दिल्ली
37. बांग्ला, असमी और ओडिया भाषा की कहानियां खंड -२, २०१७, इग्नू ,नई दिल्ली
38. मराठी, कोकण, गुजराती और राजस्थानी भाषा की कहानियां खंड-३, २०१७, इग्नू, नई दिल्ली
39. उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी और मैथिली भाषा की कहानियां खंड-४, २०१७, इग्नू ,नई दिल्ली
40. शोर के विरुद्ध सृजन, २०१७, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
41. प्रेमचंद कहानी समग्र खंड -१, २०१८, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली
42. प्रेमचंद कहानी समग्र खंड -२,२०१८,कल्पना प्रकाशन, दिल्ली

२.५ <u>अन्य</u>

कवि, आलोचक, संपादक प्रो.जितेन्द्र श्रीवास्तव ने समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं की ओर से आयोजित कार्यक्रमों में भाषण प्रस्तुत किया है। उन्होंने अब तक लगभग ६५ शोध पत्र तथा आलोचनात्मक आलेख लिखे हैं। जिनमें अलग-अलग विषय विद्यमान है। इन शोध पत्र में किसान जीवन की समस्या, हिंदू-मुस्लिम समस्या, दलित एवं वंचित वर्ग की समस्या, स्त्रियों की समस्या, राष्ट्रवाद आदि को व्यापक रूप से दिखाया गया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न लेखकों पर भी लेख लिखे हैं। इसमें प्रमुख नाम प्रेमचंद, गालिब, निराला,

दिनकर, शिव प्रकाश मिश्रा, राजेश जोशी, केदारनाथ अग्रवाल, केदारनाथ सिंह, राहुल सांकृत्यायन, रघुवीर सहाय, मुक्तिबोध, रवींद्र कालिया नामवर सिंह, मान बहादुर सिंह, विष्णु खरे आदि का नाम आता है। समकालीन कविता पर इनके तीन उल्लेखनीय आलेख 'हिंदी कविता का आज', 'हमारे समय की आंख है युवा कविता' और 'समकालीन कविता की भारतीयता' है।

जितेन्द्र ने ६० के आसपास समीक्षात्मक पत्र भी लिखे हैं। जो देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित हुए हैं। समीक्षात्मक पत्रों में भी विषय की विविधता देखी जा सकती है। इन्होंने कहानी, कविता और उपन्यास की समीक्षा पर समान रूप से अपनी लेखनी चलाई है।

इसके अतिरिक्त विविध लोकप्रिय पत्र-पत्रिकाओं में समीक्षाएं एवं टिप्पणियां प्रकाशित हुई है। बचपन से ही अध्ययन के शौकीन जितेन्द्र का लेखन बहुस्तरीय है जो उनके लेखन के विविध आयामों को दर्शाता है। अध्ययन एवं अध्यापन की विशेष प्रवृत्ति के कारण आज भी जितेन्द्र इस क्षेत्र से जुड़े हुए हैं और निरंतर पढ़ और लिख रहे हैं। हिंदी साहित्य जगत को रत्नरूपी कविताएं, आलोचना, कहानियों से समृद्ध कर रहे हैं। उनसे आशा है कि लेखन का सृजन ऐसे ही करते रहेंगे और हिंदी साहित्य के खजाने को समृद्ध करेंगे एवं समाज का मार्गदर्शन करेंगे।

संदर्भ

1. बाबू गुलाबराय, कवि के रूप,पृ.14
2. pahleebar blogspor.com>2020/11, डॉक्टर चैन सिंह मीणा की जितेन्द्र श्रीवास्तव से बातचीत
3. वही
4. जितेन्द्र श्रीवास्तव, अनभैकथा,पृ.95-96
5. जितेन्द्र श्रीवास्तव, असुंदर-सुंदर,पृ.119
6. संपादक-अरुण गुप्ता, सृजन का आयतन,पृ.234
7. जितेन्द्र श्रीवास्तव, बिल्कुल तुम्हारी तरह,पृ.62
8. कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव, संपादक-मृत्युंजय पांडे,पृ.23
9. संपादक-अरुण गुप्ता, कविता का समकालीन प्रमेय,पृ.93
10. जितेन्द्र श्रीवास्तव, इन दिनों हाल-चाल,पृ.24
11. वही,पृ.31
12. संपादक-अरुण गुप्ता, सृजन का आयतन,पृ.240
13. जितेन्द्र श्रीवास्तव, कायांतरण,पृ.25
14. http://pahleebar.blogspot.com. डॉ.चैनसिंह मीणा से जितेन्द्र श्रीवास्तव की बातचीत
15. Streekal.com
16. जितेन्द्र श्रीवास्तव, उजास,फ्लैप से
17. वही, पृ. 162
18. जितेन्द्र श्रीवास्तव, सूरज को अंगूठा,पिछले कवर पृष्ठ से साभार
19. वही,पृ.15
20. जितेन्द्र श्रीवास्तव, असुंदर-सुंदर,पृ.15
21. www.facebook.com/jitendrasrivastava
22. जितेन्द्र श्रीवास्तव-जितनी हंसी तुम्हारे होंठो,पृ.32

23. संपादक- धीरेंद्र वर्मा, हिंदी साहित्यकोश-भाग-१,पृ.95